शासन-प्रशासन की बेइन्तहा बेशमी

बरसात में सड़कों पर चलना दुश्वार, अंडरपास बने मौत की सुरंग

फ़रीदाबाद (म.मो.) शुक्रवार, 10 सितम्बर की शाम को शुरू हुई बारिश से ओल्ड फ़रीदाबाद का रेलवे अंडरपास करीब सात बजे पानी से लबालब भर गया, रास्ता बंद। अगले दिन शनिवार को करीब 10 बजे प्रात: पानी निकालने के लिये नगर निगम कारिंदे ने डीज़ल इंजन चला कर पानी निकालना शुरू किया। करीब एक घंटे बाद उसका डीजल खत्म हो गया, तब तक पानी का स्तर बमुश्किल दो-तीन फ़ीट ही घटा होगा, जो लगातार हो रही बरसात से पुन: उतना ही भर गया। शनिवार दिन भर न तो डीजल आया न पम्प चला। अगले दिन, रविवार को साढे 11 बजे यह संवाददाता स्वयं यह तमाशा देखने उक्त अंडरपास पहुंचा। तमाम वाहन रैम्प से नीचे तक जाकर, पानी भरा देख वाहनों को वापस मोड़ कर ले जा रहे थे।

इस संवाददाता ने अपना वाहन वहीं खड़ा करके अंडरपास के भीतर की स्थिति का जायजा लेने के लिये फुटपाथ द्वारा उसमें प्रवेश किया। आधा रास्ता चलने के बाद पाया कि फुटपाथ पर भी एक से दो फीट तक पानी था। मजबूरी में लोग पैंट को ऊपर करके पानी में छपल-छपल करते गुजर रहे थे। विदित है कि रेलवे ने अपनी पटरियों पर से आवागमन रोकने के लिये दोनों ओर ऊंची दीवारें खड़ी कर दी हैं। ऐसी ही एक दीवार फांदते हुए बीते सप्ताह एक व्यक्ति अंडरपास में गिर कर मर चुका था, उसके बावजूद खट्टर की बेशर्म सरकार और उनके हरामखोर अफ़सरों के कान पर जूं तक नहीं रेंगी।

फुटपाथ पर चलना भी जोखिम भरा पाया। अंडरपास के अंदर घनघोर अंधेरा, हाथ को हाथ नहीं सूझ रहा था, दिन के साढ़े 11 बजे रोशनी के लिये बल्ब आदि तो लगे हैं पर वे जलते कभी देख नहीं पाये। इतना ही नहीं सड़क से करीब डेढ़ दो फीट ऊंची इस फुटपाथ के नीचे जल निकासी के लिये नाला है जिसे 2X2 के स्लैबों से ढका गया है। संवाददाता द्वारा तय किये गये आधे रास्ते में तीन जगहों से स्लैब हटा रखे थे, शायद सफ़ाई के लिये। ऐसे ही एक स्थान पर गिरते-गिरते संवाददाता ने रेलिंग पकड़ कर अपने आप को सम्भाला। एन उसी वक्त मदद को आये एक राहगीर ने बताया कि अक्सर अंडरपास की दीवारों में करंट भी आ जाता है तो स्थिति और भी भयंकर हो जाती है।

पानी भरे होने की स्थिति में वाहनों को अंडरपास की ओर जाने से रोकने के लिये किसी प्रकार की चेतावनी की भी कोई

व्यवस्था न होने के चलते तमाम वाहन अंडरपास तक जाते हैं और फ़िर माथा पीटते हुए लौट कर हाईवे पर आते हैं। जाहिर है इसके बाद ये वाहन बड़खल या नीलम फ्लाईओवर का इस्तेमाल करते हैं। इसकी वजह से नीलम फ्लाईओवर पर वाहन रेंग-रेंग कर चलने को मजबूर होते हैं, ट्रैफ़िक जाम होना स्वाभाविक है। यह स्थिति केवल इस अंडरपास की नहीं बल्कि मेवला महाराजपुर तथा एनएचपीसी चौक वाले अंडरपासों का भी सदैव यह हाल रहता है।

तीनों अंडरपास डूबने के बाद जाहिर है आवागमन करने वालों को कई किलोमीटर का अतिरिक्त चक्कर लगाना पड़ता है, वह भी इन गड्ढों वाली सड़कों से जिन पर पानी भरा होने के चलते गड्ढे दिखाई भी नहीं देते हैं, लेकिन सबसे ज्यादा शिकार होते हैं दुपहिया वाहन चालक। इनके वाहन तो क्षतिग्रस्त होते ही हैं खुद चालक भी बुरी तरह से घायल हो रहे हैं। ऐसे ही एक दुपहिया चालक गजे सिंह, जो भैंसरावली से दूध देने सेक्टरों में आता है, ने बताया कि रविवार 12 सितम्बर को जब वह सेक्टर 16-ए की, मैट्रो अस्पताल के पीछे वाली, सड़क से गुजर रहा था तो पानी से भरे एक गड्ढे में पहिया फंसने से उसकी 10 ताड़ियां टूटने से बाइक का पहिया टेढा हो गया और वह पानी में गिर कर चोटिल हो गया तथा 15-20 किलो दूध बिखर गया। शुक्र यह है कि कोई हड्डी-पसली नहीं टूटी। इस तरह के हादसे लगातार हो रहे हैं, संज्ञान में केवल वही हादसा आता है जब कोई मौत हो जाय।

ऐसी विकट परिस्थितियों में कुछ सार्थक करने की बजाय स्थानीय नेता एवं मंत्री नौटंकी करने लगते हैं। अखबारों में अपने प्रेसनोट छपवा कर बताते हैं कि उन्होंने शहर का निरीक्षण किया, खामिया पाये जाने पर सम्बन्धित अधिकारियों की खिंचाई करी। अरे, क्या तो निरीक्षण किया और किसकी क्या खिंचाई कर दी? सब कुछ तो ज्यों का त्यों चल रहा है। शहर के अंडरपास 40-40 घंटों तक पानी में डूबे रहें, अंधेरे अंडरपास की फुटपाथ पर चलना तक दूभर हो रहा हो, कोई सड़क साबुत न बची हो तो काहे का निरीक्षण और काहे की खिंचाई? ऐसा नहीं है कि यह कुछ पहली बार हो रहा हो, यह हर साल बल्कि सदैव ही बना रहता है, हां बरसात में यह त्रासदी कुछ ज्यादा ही बढ जाती है।

दरअसल न तो नेता चाहते और न ही सम्बन्धित अफ़सर चाहते कि इन समस्याओं से शहरियों को छुटकारा मिल जाये। यदि ये समस्यायें न होंगी तो बजट कैसे आयेगा और जब आयेगा नहीं तो खायेंगे क्या? जलभराव नहीं होगा तो सड़कें टूटेंगी कैसे और जब टूटेंगी नहीं तो उन्हें फ़िर से बनाने का बजट कैसे आयेगा? इसलिये यह जरूरी है कि जलभराव होता रहे और सड़कें टूटती रहें। अब तो जलभराव से लूट कमाई का एक जरिया 'सकर' टेंकर भी आ गये हैं। ट्रैक्टरों के पीछे लगे ये सकर अजरोंदा मोड़ पर पानी खींचते नज़र आ जाते हैं। यह धंधा अभी बीते कुछ वर्षों से ही शुरू हुआ है, पहले पानी स्वत: बह कर निकल जाता था। बताने की जरूरत नहीं कि निगम वाले जो भी काम कराते हैं, उसमें उनका मोटा कमीशन रहना आवश्यक है।

पहले लूट कमाई के इस धंधे पर 'हूडा' व नगर निगम का एकाधिकार था; अब इसका विस्तार करते हुए स्मार्ट सिटी लिमिटेड कम्पनी व फ़रीदाबाद महानगर डेवेलपमेंट ऑथोरिटी भी बना दी गयी है ताकि लूट का हिस्सा और अधिक अफ़सरों में बंट सके।

आपदा को अवसर बनाने वाले भी पहुंचे

प्रात: करीब आठ बजे एक ट्रैक्टर ट्राली वाला उस अंडरपास से निकल कर काम पर जा रहा था तो एक- दो लोगों ने उसकी ट्राली पर चुपचाप चढ़ कर अंडरपास को पार कर लिया। ट्रैक्टर चालक को यह देख कर सूझा कि क्यों न आज यही धंधा कर लिया जाय। उसने ट्रैक्टर को फ़िर वापस मोड़ा और अंडरपास को पार कराने के लिये 10-10 रुपये प्रति सवारी के हिसाब से 25-30 सवारी लाद ली। डेढ मिनट में दूसरी तरफ़ पहुंच कर वापसी में आने वालों को फ़िर चढ़ा लिया; इस प्रकार प्रति चक्कर 250-300 रुपये बनने लगे।

लोगों की मजबूरी देखकर और अधिक मुनाफ़ा कमाने का लालच आया तो उसने रेट एकदम 10-20 रुपये कर दिया। कुल मिलाकर ट्रैक्टर चालक ने डेढ दो घंटे में 7000-8000 की दिहाड़ी खरी कर ली। जाहिर है कि धंधेबाज हमेशा चाहेंगे कि ऐसे ही मानव निर्मित आपदाएं आती रहें। वे सरकार और प्रशासन को दुआएं देते रहेंगे।

घर बैठे प्राप्त करें मज़दूर मोर्चा

आज ही अपने हॉकर से कहें, कोई दिक्कत हो तो शर्मा न्यूज एजेंसी से फोन नं 9811159238 पर बात करें। बल्लभगढ़ के पाठक अरोडा न्यूज एजेंसी से 9811477204 पर बात करें।

अन्य बिक्री केन्द्र :

1. प्रिंट फोर्ट, टेलीफोन एक्सचेंज के सामने नेहरू ग्राउंड।
2. रेलवे बुक स्टाल ओल्ड रेलवे स्टेशन
3. एनआईटी रेलवे स्टेशन के बाहर बाटा चौक पुल के नीचे।
4. जितेन्द्र, बाटा सेंटर - 9971064207
5. राम खिलावन-बल्लभगढ़ बस स्टैंड के सामने 9891164794
6. मोती पाहुजा - मिनार गेट पलवल, 9255029919
7. सुरेन्द्र बघेल - बस अड्डा होडल - 9991742421

केवल पाठकों के दम पर चलने वाले इस अखबार को सहयोग देकर इसकी आवाज को बुलंद रखें।

मज़दूर मोर्चा- खाता संख्या-451102010004150
IFSC Code : UBIN0545112
Union Bank of India, Sector-7, Faridabad

सैशन जज की कोठी के आगे एमसीएफ़ ने बांधा सफ़ेद हाथी लाखों रुपये का

फ़रीदाबाद (म.मो.) वैसे तो बरसात में जलभराव की समस्या से पूरा शहर ही त्रस्त रहता है लेकिन सेक्टर 15 ए में स्थित सैशन जज की कोठी के आगे तो यह समस्या नासूर बन चुकी है। जरा सी बरसात होते ही यहां एक डेढ़ फुट पानी भरना तय है जो अगर विशेष प्रबन्ध कर के नही निकाला जाये तो हफ़्तों तक खड़ा रहता है।

दो-तीन साल पहले, तत्कालीन जज साहब के हड़काने पर एमसीएफ़ ने यहां एक 'सम्प वैल' बनाकर और सनफ्लैग तक आधा किलोमीटर की पाईप लाईन डालकर इस पानी को वहां से गुजर रही मुख्य ड्रेन में डालने का प्रबन्ध किया था। इसके लिये एक पम्प सेट भी वहां लगा दिया गया था जिसका बिजली कनेक्शन कभी नहीं जोड़ा गया। लाखों रुपये खर्च करके एमसीएफ़ ने जो सफ़ेद हाथी

एमसीएफ कमिश्नर यशपाल यादव

खड़ा किया उससे कभी भी जज साहब की कोठी के सामने का पानी नहीं निकाला जा सका। बेशर्मी का आलम ये है कि इस पैसे की बर्बादी के लिये किसी भी हरामखोर को कभी जिम्मेदार नहीं ठहराया गया, सजा देना तो दूर की बात है।

अब हाल है कि जब भी बारिश होती है तो एमसीएफ़ ट्रैक्टर से खींचकर यहां एक डीजल पम्प सेट लाती है जिससे पानी निकाला जाता है। जैसा कि मज़दूर मोर्चा पहले भी लिख चुका है, इससे कम लागत में यहां एक वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम बनाया जा सकता था जिसमें न कोई बिजली की जरूरत पड़ती और न किसी 'आपरेटर' की और जमीन में पानी जाने से भूजल का स्तर भी बढ़ता। लेकिन समस्या खत्म कर दी तो एमसीएफ़ का हर साल पैसे खाने का जुगाड़ कैसे बनेगा?